वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 453
ISBN-978-93-84003-64-7

श्री शीतलनाथ विधान

–रचयित्री –

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी,
दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत
परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

जैनधर्म के दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान के गर्भकल्याणक चैत्र वदी अष्टमी (14 मार्च 2015) के शुभ अवसर पर परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा घोषित ''श्री गौतम गणधर वर्ष'' (2014-2015) के अन्तर्गत प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र., फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org, E-mail : jambudweeptirth@gmail.com
Facebook : jaintirthjambudweep

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

प्रथम संस्करण	वीर नि. सं. 2541	मूल्य
2200 प्रतियाँ	चैत्र वदी अष्टमी, (14 मार्च 2015)	20/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएँ भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
(दो बार डी.लिट्. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
(पीएच.डी. की मानद उपाधि से अलंकृत)

–: निर्देशक एवं सम्पादक:–

कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

—कर्मयोगी पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामीजी

ॐ नमो मंगलं कुर्यात्, ह्रीं नमश्चापि मंगलम्।
मोक्षबीजं महामंत्रं, अर्हं नमः सुमंगलम्।।

वर्तमान में–कलियुग में आज घर गृहस्थी में अनेक समस्याएँ आ जाती हैं जिससे अक्सर लोग माताजी के पास आते हैं और पूज्य माताजी से निवेदन करते हैं माताजी हमारे ऊपर बहुत संकट आया है आप ही इसे दूर कर सकती हैं। माताजी उन्हें यंत्र–मंत्र बता देती हैं और कहती हैं आप इसे श्रद्धापूर्वक करिए आपका संकट अवश्य दूर होगा।

इसके साथ ही माताजी एक बात प्रायः सबसे कहती हैं कि घर गृहस्थी में रहते हुए भी यदि आप लोग समय–समय पर पूजा विधान करते रहें, प्रतिदिन भगवान का दर्शन करें, अभिषेक, पूजन आदि करें तो संकट नहीं आएगा। आचार्यों ने शास्त्रों में श्रावक के षट् कर्त्तव्य बताए हैं–

देवपूजा–गुरूपास्तिः स्वाध्यायः संयमस्तपः।
दानं चेति गृहस्थानां षट्कर्माणि दिने दिने।।

अर्थात् देवपूजा, गुरुओं की उपासना, स्वाध्याय, संयम, तप और दान ये श्रावक के छह आवश्यक हैं। इन्हें प्रतिदिन करने से श्रावक धर्म सार्थक होता है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी चारित्रचन्द्रिका, युगप्रवर्तिका, राष्ट्रगौरव, दिव्यशक्ति परम पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने 400 ग्रंथों की रचना करके एक कीर्तिमान स्थापित किया है। पूज्य माताजी की सभी रचनाएँ अद्वितीय हैं। 24 तीर्थंकरों के पृथक्–पृथक् विधानों में यह श्री शीतलनाथ विधान पूज्य माताजी ने रचकर तैयार किया है। यह विधान भी अतिशयकारी विधान है, क्योंकि इसमें भगवान की दिव्यध्वनि वाणी के एवं उनके गुणों के अर्घ्य हैं। यह विधान सभी के जीवन में सुख, शान्ति, समृद्धि को दिलाए, यही मंगल भावना है।

पूज्य माताजी स्वस्थ रहें, दीर्घायु प्राप्त करें, वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला उत्तरोत्तर उन्नति को प्राप्त हो, यही जिनेन्द्रदेव से मंगल कामना है।

प्रस्तावना

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जैनधर्म के वर्तमानकालीन 24 तीर्थंकरों में दसवें तीर्थंकर श्री शीतलनाथ भगवान का यह विधान है। श्री शीतलनाथ भगवान का जन्म भद्रिकापुरी में पिता दृढ़रथ और माता सुनंदा के महल में माघ वदी बारस को हुआ। माघ वदी बारस को ही भगवान ने दीक्षा ली। पौष वदी चौदस को भगवान को केवलज्ञान हुआ और आश्विन सुदी अष्टमी को भगवान ने सम्मेदाचल से मोक्षधाम को प्राप्त किया। पंचकल्याणक से सहित भगवान शीतलनाथ संसार के सभी प्राणियों को शीतलता प्रदान करने वाले हैं।

इक्ष्वाकुवंश के भास्कर श्री शीतलनाथ भगवान का वर्ण स्वर्ण सदृश था, इनका चिन्ह कल्पवृक्ष था। इनके शरीर की ऊँचाई तीन सौ साठ हाथ एवं आयु एक लाख वर्ष पूर्व की थी। चौंतीस अतिशयों एवं आठ प्रातिहार्य से सहित ऐसे तीर्थंकर शीतलनाथ का यह विधान सभी के जीवन में शीतलता प्रदान करने वाला है।

जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने भगवान महावीर के शासनकाल में जिनधर्म की, जिनवाणी की विशेष प्रभावना करते हुए 400 ग्रंथों का लेखन किया है जिनमें से छोटे–बड़े विधानों की संख्या 100 हैं। चौबीस तीर्थंकर का एक वृहत् एवं एक लघु विधान के साथ–2 चौबीस तीर्थंकरों के अलग–2 विधानों की भी रचना कर दी है। जिनमें से कुछ तीर्थंकरों के पृथक् विधान अभी छपने बाकी हैं।

यह श्री शीतलनाथ विधान आपके हाथ में विधान करने हेतु आ रहा है इस विधान में सर्वप्रथम मंगलाचरण है फिर श्री समंतभद्र स्वामी विरचित श्री शीतलनाथ जिनस्तवन एवं पूज्य माताजी द्वारा रचित श्री शीतल जिनस्तोत्र है। इसके बाद अर्हंत पूजा है। अर्हंत पूजा के बाद तीर्थंकर श्री शीतलनाथ दिव्यध्वनि वाणी के 56 अर्घ्य हैं। चौबीसों तीर्थंकरों की दिव्यध्वनि एक समान ही खिरती है जो कि जग के कल्याण के लिए होती है। पूज्य माताजी ने इसमें लिखा है–

चौबीसों तीर्थेश की, द्वादशांगमय वाणि।
दिव्यध्वनी है एक सम, अतिशय जगकल्याणि।।

इस दिव्यध्वनि वाणी के 56 अर्घ्य में प्रथमदल में द्वादशांग के 12 अर्घ्य हैं।

दृष्टिवाद के पाँच भेद–परिकर्म, सूत्र, प्रथमानुयोग, पूर्वगत और चूलिका है उसमें से द्वितीय दल में परिकर्म के पाँच अर्घ्य हैं। तृतीय दल में दृष्टिवाद के भेद सूत्र का एक अर्घ्य है। चतुर्थदल में दृष्टिवाद के तृतीय भेद प्रथमानुयोग का एक अर्घ्य है। पंचमदल में पूर्वगत के 14 अर्घ्य हैं। षष्ठम दल में चूलिका के पाँच अर्घ्य हैं। सप्तम दल में अंगबाह्य के सामायिक प्रकीर्णक, चतुर्विंशतिस्तव प्रकीर्णक आदि 14 अर्घ्य हैं। अष्टम दल में चार अनुयोग–प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग एवं द्रव्यानुयोग के 4 अर्घ्य हैं। इस प्रकार दिव्यध्वनि वाणी के 12 + 5 + 1 + 1 + 14 + 5 + 14 + 4 = 56 अर्घ्य हैं एवं 2 पूर्णार्घ्य हैं।

इसके बाद पूज्य माताजी ने शीतलनाथ भगवान के अनंतगुणों में से 108 गुणों के 108 मंत्र के अर्घ्य दिए हैं। इसके प्रारम्भ में लिखा है–

श्री शीतल जिनराज के, गुण अनंत अभिराम।
कतिपय गुण को मैं जजूं, शत शत करूँ प्रणाम।।

108 मंत्र के अर्घ्य के बाद 1 पूर्णार्घ्य है। जाप्यमंत्र के बाद जयमाला है। जयमाला में पूज्य माताजी ने भगवान के समवसरण का सुन्दर वर्णन किया है–

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
सीढ़ी से ऊपर अधर भूमि, यह तीस कोश की गोल दिखे।।
यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।

जयमाला के बाद प्रशस्ति है। प्रशस्ति के बाद मेरे द्वारा रचित भद्रिकापुरी तीर्थ की पूजा है। इसके बाद भगवान श्री शीलतनाथ एवं भद्दिलपुर तीर्थ की मंगल आरती एवं भजन हैं।

इस प्रकार इस विधान में कुल 3 पूजा, श्री शीतलनाथ दिव्यध्वनि वाणी के 56 अर्घ्य एवं 108 मंत्र के 108 अर्घ्य मिलाकर कुल 164 अर्घ्य, 3 पूर्णार्घ्य एवं 3 जयमाला हैं। यह विधान सभी के जीवन में शीतलता एवं सुख, शांति, समृद्धि को प्रदान करे, यही मंगल भावना है।

卐

दो शब्द

–आर्यिका स्वर्णमती

शीतल प्रभु तुमको नमूँ सदा, मेरे मन को शीतल करिए।
भव–भव में भक्ति रहे तुझमें, बस मुझ पर कृपा दृष्टि धरिए।।

बीसवीं सदी में मुनि परम्परा को जीवन्त करने वाले युगप्रवर्तक प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज के 3 बार दर्शन करने वाली, उनसे अनुभव ज्ञान प्राप्त करने वाली, प्रथम पट्टशिष्य चारित्र चूड़ामणि आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा को प्राप्त कर ज्ञानमती नाम को सार्थक करने वाली, बीसवीं सदी की युगप्रवर्तिका, प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका, चारित्रचन्द्रिका, आर्यिका शिरोमणि गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी हैं।

पूज्य माताजी ने जिनधर्म, जिनागम की विशेष प्रभावना करते हुए अब तक लगभग 400 ग्रंथों की रचना की हैं जिनमें से अभी कुछ ग्रंथ अप्रकाशित हैं। आज के भौतिक युग में लोगों को धर्ममार्ग में लगाने के लिए भगवान की भक्ति, पूजा विधान, स्तुति आदि सशक्त माध्यम है।

माताजी की लेखनी से लिखा गया एक–एक शब्द मोती की माला के समान सुशोभित है। पूज्य माताजी ने भगवान के सहस्रनाम मंत्र से लेखनी का शुभारम्भ किया। अष्टसहस्री ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद किया। षट्खण्डागम सूत्र ग्रंथ पर **'सिद्धान्त चिन्तामणि'** नाम से संस्कृत टीका 16 पुस्तकों की 3100 पृष्ठों में लिखकर एक कीर्तिमान स्थापित किया है। नियमसार ग्रंथ पर **'स्याद्वादचन्द्रिका'** नाम से संस्कृत टीका एवं समयसार ग्रंथ पर **'ज्ञानज्योति'** हिन्दी टीका लिखी है।

विधानों में इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक, सिद्धचक्र, समवसरण, जम्बूद्वीप आदि बड़े विधानों के साथ–साथ शान्ति विधान आदि छोटे विधानों को मिलाकर 100 की संख्या में विधानों की रचना की है। 365 दिन में प्रतिदिन कहीं न कहीं पूज्य माताजी द्वारा रचित विधान होते ही रहते हैं। जम्बूद्वीप पर प्रतिदिन कोई न कोई विधान होता ही रहता है।

विधानों की श्रृंखला में यह **'श्री शीतलनाथविधान'** बहुत ही सुन्दर विधान है। इस विधान में तीर्थंकर भगवान की दिव्यध्वनि वाणी के एवं उनके गुणों के अर्घ्य हैं।

पूज्य माताजी के ज्ञानगुण की पूजा करते हुए मैं यही भावना करती हूँ कि पूज्य माताजी के गुण मुझमें अवतरित हों। यह विधान मेरे जीवन में श्रुतज्ञान, केवलज्ञान को प्राप्त करावे, इसी मंगल भावना के साथ पूज्य माताजी के पावन चरणों में कोटि–कोटि नमन।

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान—टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि—आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति—अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**—गोयल, **नाम**—कु. मैना

माता-पिता—श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत—ई. सन् 1952, बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा—चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम—क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा—वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व—अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं लगभग 300 ग्रंथों की लेखिका।

डी.लिट्. की मानद उपाधि—सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा एवं तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय मुरादाबाद द्वारा 8 अप्रैल 2012 को "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा—हस्तिनापुर में जंबूद्वीप, तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा—भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा, महावीर जी तीर्थ पर महावीर धाम में पंचबालयति मंदिर, शिर्डी में ज्ञानतीर्थ इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा—पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा—'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा—जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

विषयानुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
1. मंगलाचरण	1
2. श्री शीतलजिनस्तवनम्	1
3. श्री शीतलनजिनस्तोत्र	2
4. अर्हंत पूजा	3
5. श्री शीतलनाथ जिनपूजा	8
6. श्री शीतलनाथ दिव्यध्वनि वाणी के 56 अर्घ्य	11
7. 108 मंत्र के 108 अर्घ्य	25
8. जयमाला	33
9. प्रशस्ति	36
10. भद्दिलपुर तीर्थ पूजा	37
11. भगवान श्री शीतलनाथ की आरती	43
12. भद्दिलपुर तीर्थ की आरती	44
13. भजन—चलो सब मिल यात्रा कर लो.....	45
14. भजन—इस युग की माँ शारदे......	46
15. भजन—शारद माता का रूप दिखाया......	47
16. मण्डल का नक्शा	48

श्री शीतलनाथ विधान

मंगलाचरण

–अनुष्टुप् छंद–

शीतलेश! नमस्तुभ्यं, वचस्ते सर्वतापहृत्।
श्रीमत् शीतलनाथाय, शीतीभूताय देहिनाम्।।1।।

–इंद्रवज्रा छंद–

संसारदावाग्निषु दग्धजीवाः, शीतीभवन्त्याश्रयतस्तवैव।
श्रीशीतलेशो भुवनत्रयेशः, शीतं मनो मे कुरु वाक्सुधाभिः।।2।।

श्री शीतलजिनस्तवनम्–

न शीतलाश्चन्दन–चन्द्र रश्मयो।
न गाङ्गमम्भो न च हार–यष्टयः।
यथा मुनेस्तेऽनघ वाक्य–रश्मयः।
शमाऽम्बु–गर्भाः शिशिरा विपश्चितां।।3।।
सुखाऽभिलाषाऽनल–दाह–मूर्च्छितं।
मनो निजं ज्ञानमयाऽमृताम्बुभिः।
व्यदिध्यपस्त्वं विष–दाह–मोहितं–
यथा भिषग्–मन्त्र–गुणैः स्व–विग्रहम्।।4।।

त्वमुत्तम–ज्योतिरजः क्व निर्वृतः
क्व ते परे बुद्धि–लवोद्धव–क्षताः।
ततः स्व निःश्रेयस–भावना–परै–
र्बुधप्रवेकैर्जिन! शीतलेऽड्यसे[1]।।5।।

श्री शीतलजिन स्तोत्र

यदि किसी तरह से हे शीतल! शशि किरण सदृश तव वचन मिले।
भव आतप से झुलसे प्राणी, के तत्क्षण ही मन कुमुद खिले।।
फव्वारागृह अमृतवाणी, मलयाचल चंदन भी फिर क्या ?
त्रिभुवन दुख दाव शांत करते, शीतल तव वचन अहो फिर क्या?।।1।।

वह भद्रपुरी प्रभु जन्म लिया, जग भद्रकरी सुर पूज्य हुई।
दृढ़रथ नरनाथ सुनंदा भी, सुरवंद्य प्रजा भी धन्य हुई।।
वदि चैत्र अष्टमी गर्भ बसे, वदि बारस माघ सुजन्मे थे।
शुभ माघ वदी बारस के प्रभु, दीक्षा ले वन–वन घूमे थे।।2।।

वदि पौष चतुर्दशि केवल रवि, किरणों ने जगत प्रकाश किया।
आश्विन सित अष्टमि के प्रभु ने, वर मुक्ति नगर का राज्य लिया।।
सम्मेदशिखर है पूज्य धाम, शीतल प्रभु शीतल कृत जग में।
सबसे शीतल है स्वात्मधाम, उसमें ही आप विराज रहे।।3।।

इक्ष्वाकु वंश कनकाभतनु, श्रीवृक्ष चिन्ह से जाने सब।
तनु तुंग तीन सौ साठ हाथ, आयु इक लक्ष वर्ष पूरब।।
शीतल प्रभु तुमको नमूं सदा, मेरे मन को शीतल करिए।
भव–भव में भक्ति रहे तुझमें, बस मुझ पर कृपा दृष्टि धरिये।।4।।

।।अथ जिनयज्ञप्रतिज्ञापनाय मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

1. स्वयंभूस्तोत्र अन्तर्गत।

पूजा नं. 1

अर्हंत पूजा

स्थापना–गीता छंद

अरिहंत प्रभु ने घातिया को घात निज सुख पा लिया।
छ्यालीस गुण के नाथ अठरह दोष का सब क्षय किया।।
शत इंद्र नित पूजें उन्हें गणधर मुनी वंदन करें।
हम भी प्रभो! तुम अर्चना के हेतु अभिनन्दन करें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं अर्हन् नमः हे अर्हत्परमेष्ठिन्! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–बसन्ततिलका छंद–

श्रीमज्जिनेंद्र पद में जलधार देऊं।
आतंक पंक जग का सब दूर होवे।।
इच्छानुसार फलदायक कल्पतरू ये।
पूजा जिनेन्द्रप्रभु की त्रय ताप नाशे।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमेष्ठिभ्यः स्वाहा। (जलं निर्वपामीति स्वाहा।)

काश्मीरि केशर सुचंदन को घिसाऊँ।
चर्चूं जिनेन्द्र पदपंकज में रुचि से।।
संसार के सकल ताप विनाश करती।
पूजा जिनेन्द्र प्रभु की सब सौख्य देती।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परमात्मकेभ्यः चंदनं ... ।

जो कुंदपुष्प कलियों सम दीखते हैं।
धोये सु तंदुल लिये भर थाल में हैं।।
अर्हंत सन्मुख रखूँ बहु पुंज नीके।
पाथेय मोक्षपथ में जन के लिये हो।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनादिनिधनेभ्यः अक्षतं ... ।

मल्ली गुलाब वर पुष्प सुगंधि करते।
अर्हंत के चरण में रुचि से चढ़ाऊँ।।
पापान्धकूप मधि डूब रहे जनों को।
उद्धार हेतु जिनपूजन ही जगत् में।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः सर्वनृसुरासुरपूजितेभ्यः पुष्पं ... ।

शालीय ओदन सुगंधित भोज्यवस्तू।
पीयूष तुल्य चरु लेकर थाल भरके।।
अर्हंत सन्मुख चढ़ा क्षुध व्याधि नाशूँ।
तृप्ती अनंत जिनपूजन से मिलेगी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतज्ञानेभ्यः नैवेद्यं ... ।

जो चित्त का तमसमूह विनाश करके।
त्रैलोक्यगेह वर दीपक दीप ज्योति।।
ले दीप आरति करूँ वरज्ञानज्योति।
पाऊँ अनंत निजज्ञान विकास करके।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतदर्शनेभ्यः दीपं ... ।

जो धूप सुन्दर सुगंध बिखेरती है।
अग्नी विषे जलत धूम्र उड़ावती है।।
खेऊँ दशांगवर धूप जिनेन्द्र आगे।
संपूर्ण पाप जलते वर सौख्य होगा।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतवीर्येभ्यः धूपं ... ।

ये कल्पवृक्ष फल सम अति मिष्ट ताजे।
अमृत समान रस से परिपूर्ण दीखें।।
पूजा करूँ फल चढ़ाकर आपकी मैं।
स्वात्मैक सिद्धि फल प्राप्त करूँ इसी से।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः अनंतसौख्येभ्यः फलं ... ।

नीरादि आठ वर द्रव्य संजोय करके।
घंटा ध्वजा चंवर छत्र सुदर्पणादी।।
मांगल्य द्रव्य शुभ लेकर पूजते ही।
संपूर्ण मंगल मिले निज सौख्य पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः परममंगलेभ्यः अर्घ्यं ... ।

श्रीपूज्यपाद जिन के चरणाब्ज नमते।
संपूर्ण इंद्र शिर से अतिभक्ति भावे।।
श्री पूज्य के पदनिकट जलधार देते।
हो शांति लोक त्रय में मुझ भक्त को भी।।10।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः स्वस्ति भद्रं भवतु जगतां शांतये शांतिधारां निष्पादयामि शांतिकृद्भ्यः स्वाहा।

(शांतिधारा करें)

जो इन्द्र भक्ति वश नेत्र हजार करके।
बाहू हजार कर तांडव नृत्य करता।।
ऐसे जिनेन्द्रपद पुष्प चढ़ाय करके।
पूजा त्रिकाल कर अनुपम सौख्य पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रीं अर्हन् नमः ध्यातृभिः अभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा।

(पुष्पांजलि चढ़ावें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं अर्हं अर्हत्परमेष्ठिभ्यो नमः।

जयमाला

–दोहा–

श्री अरिहंत जिनेन्द्र का, धरूँ हृदय में ध्यान।
गाऊँ गुणमणिमालिका, हरूँ सकल अपध्यान।।1।।

–शम्भु छंद–

जय जय प्रभु तीर्थंकर जिनवर, तुम समवसरण में राज रहे।
जय जय अर्हंत् लक्ष्मी पाकर, निज आत्मा में ही आप रहे।।

जन्मत ही दश अतिशय होते, तन में न पसेव न मल आदी।
पयसम सित रुधिर सु समचतुष्क, संस्थान संहनन है आदी।।1।।

अतिशय सुरूप, सुरभित तनु हैं, शुभ लक्षण सहस आठ सौ हैं।
अतुलित बल प्रियहित वचन प्रभो, ये दश अतिशय जन मन मोहें।।
केवल रवि प्रगटित होते ही, दश अतिशय अद्भुत ही मानो।
चारों दिश इक-इक योजन तक, सुभिक्ष रहे यह सरधानो।।2।।
हो गगन गमन नहिं प्राणीवध, नहिं भोजन नहिं उपसर्ग तुम्हें।
चउमुख दीखें सब विद्यापति, नहिं छाया नहिं टिमकार तुम्हें।।
नहिं नख औ केश बढ़े प्रभु के, ये दश अतिशय सुखकारी हैं।
सुरकृत चौदह अतिशय मनहर, जो भव्यों को हितकारी हैं।।3।।

सर्वार्ध मागधीया भाषा, सब प्राणी मैत्री भाव धरें।
सब ऋतु के फल औ फूल खिलें, दर्पणवत् भूरत्नाभ धरें।।
अनुकूल सुगंधित पवन चले, सब जन मन परमानंद भरें।
रजकंटक विरहित भूमि स्वच्छ, गंधोदक वृष्टी देव करें।।4।।

प्रभु पद तल कमल खिलें सुन्दर, शाली आदिक बहु धान्य फलें।
निर्मल आकाश दिशा निर्मल, सुरगण मिल जय जयकार करें।।
अरिहंत देव का श्रीविहार, वर धर्मचक्र चलता आगे।
वसु मंगल द्रव्य रहें आगे, यह विभव मिला जग के त्यागे।।5।।

तरुवर अशोक सुरपुष्प वृष्टि, दिव्यध्वनि चौंसठ चमर कहें।
सिंहासन भामंडल सुरकृत, दुंदुभि छत्रत्रय शोभ रहें।।
ये प्रातिहार्य हैं आठ कहे, औ दर्शन ज्ञान सौख्य वीरज।
ये चार अनंत चतुष्टय हैं, सब मिलकर छ्यालिस गुण कीरत।।6।।

क्षुध तृषा जन्म मरणादि दोष, अठदश विरहित निर्दोष हुए।
चउ घाति घात नवलब्धि पाय, सर्वज्ञ प्रभू सुखपोष हुए।।
द्वादशगण के भवि असंख्यात, तुम धुनि सुन हर्षित होते हैं।
सम्यक्त्व सलिल को पाकर के, भव भव के कलिमल धोते हैं।।7।।

मैं भी भवदुःख से घबड़ा कर, अब आप शरण में आया हूँ।
सम्यक्त्व रतन नहिं लुट जावे, बस यही प्रार्थना लाया हूँ।।
संयम की हो पूर्ती भगवन्! औ मरण समाधी पूर्वक हो।
हो केवल 'ज्ञानमती' सिद्धी, जो सर्व गुणों की पूरक हो।।8।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं अर्हत्परमेष्ठिभ्यः जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–दोहा–

मोह अरी को हन हुए, त्रिभुवन पूजा योग्य।
नमो नमो अरिहंत को, पाऊँ सौख्य मनोज्ञ।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

तीर्थंकर श्री शीतलनाथ जिनपूजा

–अथ स्थापना (शंभुछंद)–

हे शीतल तीर्थंकर भगवन्! त्रिभुवन में शीतलता कीजे।
मानस शारीरिक आगंतुक, त्रय ताप दूर कर सुख दीजे।।
चारण ऋद्धीधारी ऋषिगण, निज हृदय कमल में ध्याते हैं।
हम भी प्रभु का आह्वानन कर, सम्यक्त्व सुधारस पाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकर! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकर! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथ अष्टकं (शंभु छंद)–

भर जावे पूरा त्रिभुवन भी, प्रभु इतना नीर पिया मैंने।
फिर भी नहिं प्यास बुझी अब तक, इसलिए नीर से पूजूँ मैं।।
हे शीतल तीर्थंकर! तुमको, पूजत मन शीतल हो जावे।
वच शीतल हों सब व्याधि नशें, तनु में शीतलता आ जावे।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु त्रिभुवन में भी घूम घूम, शीतलता चाही चंदन से।
प्रभु अब शीतलता होवेगी, चंदन तुम पद में चर्चन से।।हे.।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिभुवन में सब पद प्राप्त किया, वे खंड खंड हो बिखर गये।
अक्षत से पूजूँ पद पंकज, हो मुझ अखंड पद इसीलिए।।हे.।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

तुम कीर्ति सुगंधी त्रिभुवन में, प्रभु फैल रही गणधर गायें।
इसलिए सुगंधित कुसुम लिये, तुमपद पूजें निज यश पायें।।हे.।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु तीनलोक से अधिक अन्न, पकवान खा चुका मैं जग में।
फिर भी नहिं भूख मिटी इनसे, अतएव चरू से पूजूँ मैं।।हे.।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अज्ञान अंधेरा त्रिभुवन में, नहिं देख सका निज आत्मा को।
इसलिए दीप से मैं पूजूँ, निज ज्ञान ज्योति मुझ प्रगटित हो।।हे.।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

ये कर्म त्रिजग में दुःख देते, इनको अब शीघ्र जलाने को।
मैं धूप अग्नि में खेऊँ अब, प्रभु पूजा यश फैलाने को।।हे.।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध फल की प्राप्ति हेतु, मैं घूम चुका प्रभु त्रिभुवन में।
अब एक मोक्ष फल प्राप्ति हेतु, फल मधुर चढ़ाऊँ तुम पद में।।हे.।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्मनिधी को भूल गया, बस मूल्य विषय सुख का आंका।
वर 'ज्ञानमती' हित अर्घ्य चढ़ाकर, प्रभु पाऊँ रत्नत्रय सांचा।।हे.।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा –

प्रभु त्रयधारा करूँ, त्रिभुवन शांती हेतु।
शीतल जिन की भक्ति है, भवि को भवदधि सेतु।।10।।

शांतये शांतिधारा।

शीतल जिन पदकमल में, पुष्पांजलि विकिरंत।
तिहुंजग यश विस्तार के, त्रिभुवन सौख्य भरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

पंचकल्याणक अर्घ्य

–गीता छंद –

शीतल प्रभू अच्युत सुरग से, भद्रिकापुरि आ गये।
दृढ़रथ पिता माता सुनंदा, के गरभ में आ गये।।

तिथि चैत्र कृष्णा अष्टमी, धनपति रतन बरसा रहा।
इन्द्रादि गर्भोत्सव किया, पूजत गरभ के दुख दहा।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरगर्भकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि माघ कृष्णा द्वादशी, प्रभु जन्मते बाजे बजे।
देवों के आसन कंप उठे, सुर इन्द्र थे हर्षित तबे।।
सुरशैल पर पांडुकशिला पे, जन्म अभिषव था हुआ।
जिन जन्म कल्याणक जजत, मेरा जनम पावन हुआ।।2।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरजन्मकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हिमनाश देखा नाथ के, मन में विरक्ती छा गई।
वदि माघ बारस पालकी, शुक्रप्रभा तब आ गई।।
सुरपति सहेतुक बाग में, लेकर गये प्रभु चौक पे।
सिद्धं नमः कह लोच कर, दीक्षा ग्रही पूजूँ अबे।।3।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाद्वादश्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरदीक्षाकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष वदि चौदश जिनेश्वर, शुक्ल ध्यानी हो गये।
तब बेलतरु तल में त्रिलोकी, सूर्य केवल पा गये।।
सुंदर समवसृति में अधर, तिष्ठे असंख्यों भव्य को।
संबोध वचपीयूष से, तारा जजूँ जिनसूर्य को।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णाचतुर्दश्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरकेवलज्ञानकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन सुदी अष्टम तिथी, सम्मेदगिरि पे जा बसे।
इक सहस साधू साथ ले, मुक्तीनगर में जा बसे।।
अतिशय अतीन्द्रिय सौख्य, परमानंद अमृत पा लिया।
शीतल प्रभू का मोक्षकल्याणक, जजत निजसुख लिया।।5।।

ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाअष्टम्यां श्रीशीतलनाथतीर्थंकरमोक्षकल्याणकाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (दोहा) –

शीतल तीर्थंकर प्रभो! आप त्रिजग के नाथ।
मन-वच-तन शीतल करो, जजूँ नमाकर माथ।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकरपंचकल्याणकाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

श्री शीतलनाथ दिव्यध्वनि वाणी के अर्घ्य
(56 अर्घ्य)

–दोहा–

चौबीसों तीर्थेश की, द्वादशांगमय वाणि।
दिव्यध्वनी है एक सम, अतिशय जगकल्याणि।।1।।

शीतल जिनवर के वचन, द्वादशांगमय शीत।
पुष्पांजलि कर पूजहूँ, कोटि नमूं धर प्रीत।।2।।

।।इति मंडलस्योपरि पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

अथ प्रथमदले पुष्पांजलिः

–चौपाई –

मुनियों के आचार प्रधान, उनका पूरण करे बखान।
करो यत्नपूर्वक सब क्रिया, जिससे मिले शीघ्र शिवप्रिया।।

–दोहा–

पद हैं आचारांग में, अठरह सहस प्रमाण।
शीतल जिनवर वचन को, जजत सौख्य निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-आचारांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

स्वसमय परसमयों को कहे, स्त्री के लक्षण वरणये।
सूत्रकृतांग दूसरा अंग, इसको नमत मिले सुख संग।।

–दोहा–

इसी दूसरे अंग में, पद छत्तीस हजार।
शीतल जिनवर वचन को, जजत समय का सार।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतसूत्रकृतांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

जीव और पुद्गल के भेद, एक दोय त्रय आदि अनेक।
वर्णे स्थानांग सदैव, पूजत मिले ज्ञान स्वयमेव।।

–दोहा–

तीजे स्थानांग में, पद ब्यालीस हजार।
शीतल जिनवर वचन को, जजत स्वात्मनिधि सार।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतस्थानांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

द्रव्य अपेक्षा रहें समान, उसे कहें समवाय सुमान।
क्षेत्र काल अरु भाव समान, इनका भी यह करे बखान।।

–दोहा–

एक लाख चौंसठ सहस, पद इसके हैं जान।
पूजत ही जिनके सदृश, मिलता स्वात्म निधान।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतसमवायांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

जीव अस्ति या नास्ती आदि, साठ हजार प्रश्न इत्यादि।
इनका उत्तर देवे नित्य, व्याख्या प्रज्ञप्ती वह सिद्ध।।

–दोहा–

पद माने दो लाख अरु, अट्ठाईस हजार।
वसुविध अर्घ चढ़ाय हूँ, मिले सुगुण भंडार।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतव्याख्याप्रज्ञप्ति-अंगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

तीर्थंकर की धर्म कथादि, दिव्यध्वनि से वर्णे सादि।
त्रय संध्या में खिरती ध्वनी, संशय आदि दोष को हनी।।

–दोहा–

पांच लाख छप्पन सहस, पद हैं इसमें जान।
नाथ[1] धर्म-कथांग यह, जजूँ इसे गुणखान।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-नाथधर्मकथांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

पाक्षिक नैष्ठिक साधक भेद, श्रावक के प्रतिमादि अनेक।
इनका वर्णन करे अमंद, सो उपासकाध्ययन सुअंग।।

–दोहा–

ग्यारह लख सत्तर सहस, पद हैं इसमें सिद्ध।
जो पूजें नित भाव से, वे पद लहें अनिंद्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-उपासकाध्ययनांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रति तीर्थंकर तीरथकाल, दश दश मुनि निज आत्म संभाल।
घोर घोर उपसर्ग सहंत, केवलि हो निर्वाण लहंत।।

–दोहा–

अन्तःकृत दश नाम यह, अंग जजूँ धर नेह।
तेइस लख अठवीस सहस, पद से यह वर्णेय।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंतःकृतदशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

चौबिस तीर्थंकर का तीर्थ, उनमें हो दश दश मुनि ईश।
घोरोपसर्ग सहनकर मरे, अनुत्तर में इन्द्र अवतरे।।

–दोहा–

अनुत्तरौपपादिक दशं, अंग जजूँ सुखकार।
पद हैं बानवे लाख अरु, चव्वालीस हजार।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत–अनुत्तरौपपादिकदशांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. ज्ञातृधर्मकथांग नाम भी है।

–चौपाई –

आक्षेपिणि विक्षेपिणि तथा, संवेदनि निर्वेदनि कथा।
नष्ट मुष्टि चिंतादिक प्रश्न, वर्णन करता है यह अंग।।

–दोहा–

इसमें पद तिरानवे, लाख व सोल हजार।
प्रश्न व्याकरण अंग को, जजूँ मिले सुखकार।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतप्रश्नव्याकरणांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

शुभ अरु अशुभ कर्मफल पाक, वर्णन करता अंग विपाक।
द्रव्य क्षेत्र काल अरु भाव, इनके आश्रय कहे स्वभाव।।

–दोहा–

इस विपाक सूत्रांग में, पद हैं एक करोड़।
लाख चुरासी भी कहें, जजूँ सदा कर जोड़।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतविपाकसूत्रांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–चौपाई –

तीन शतक त्रेसठ मत भिन्न, उनका वर्णन करे अखिन्न।
नाना भेद सहित यह अंग, दृष्टिवाद नाम यह अंत।।

–दोहा–

इक सौ आठ करोड़ अरु, पद हैं अड़सठ लाख।
छप्पन हजार पाँच भी, जजूँ नमाकर माथ।।12।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादांगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ द्वितीयदले पुष्पांजलिः

–शंभु छंद –

इस दृष्टिवाद के पाँच भेद, परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग।
पूरबगत अरु चूलिका कही, इनमें भी कहे प्रभेद योग।।

पहले परिकर्म के पांच भेद, उनमें शशि प्रज्ञप्ती पहला।
उसमें पद छत्तिस लाख पांच, हज्जार जजूँ ले अर्घ भला।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतचन्द्रप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दूजा सूरज प्रज्ञप्ति कहा, परिकर्म सूर्य से संबंधी।
आयू मंडल परिवार ऋद्धि, अरु गमन अयन दिन-रात विधी।।
इन सबका वर्णन करता यह, इसको भक्ती से पूजूँ मैं।
पद पांच लाख अरु तीन सहस, इन वंदत भव से छूटूँ मैं।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतसूर्यप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रज्ञप्ती जंबूद्वीप नाम, यह मेरु कुलाचल क्षेत्रादिक।
वेदिका सरोवर नदी भोग, भू जिनमंदिर सुरभवनादिक।।
इस जंबूद्वीप के मध्य विविध, रचना का वर्णन करता है।
पद तीन लाख पच्चीस सहस, इनका अर्चन भव हरता है।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतजंबूद्वीपप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इस मध्यलोक में द्वीप और, सागर हैं संख्यातीत कहे।
किसमें क्या है? यह सब वर्णे, व्यंतर आदिक आवास कहे।।
इसमें पद बावन लाख तथा, छत्तीस हजार बखाने हैं।
हम भक्ती से पूजें इसको, जिससे भव भव दुःख हाने हैं।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतद्वीपसागरप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

व्याख्या प्रज्ञप्ती परीकर्म, जीवाजीवादिक द्रव्यों को।
भव्यों व अभव्यों सिद्धों को, वर्णे बहु वस्तू भेदों को।।
इसमें पद लाख चुरासी अरु, छत्तीस हजार बखाने हैं।
हम इसकी पूजा करके ही, निज आत्मा को पहचाने हैं।।17।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतव्याख्याप्रज्ञप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ तृतीयदले पुष्पांजलिः

उस दृष्टिवाद का भेद दूसरा, सूत्र नाम का माना है।
है जीव अबंधक अवलेपक, इत्यादिक करे बखाना है।।

यह क्रिया-अक्रियावादों को, अरु विविध गणित को वर्णे है।
पद हैं अट्ठासी लाख कहे, इसको पूजूँ भवतरणी ये।।18।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादभेदसूत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ चतुर्थदले पुष्पांजलिः

तीर्थंकर चक्री हलधर अरु, नारायण प्रतिनारायण हैं।
त्रेसठ ये शलाकापुरुष कहे, इनके चरित्र को वर्णे ये।।
जिनवर विद्याधर ऋद्धीधर, मुनियों राजादिक पुरुषों को।
वर्णे पद इसमें पाँच सहस, प्रथमानुयोग पूजूँ इसको।।19।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतदृष्टिवादभेदप्रथमानुयोगाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ पंचमदले पुष्पांजलिः

चौथा है भेद पूर्वगत जो, इसके भी चौदह भेद कहे।
उत्पाद पूर्व पहला यह भी, उत्पत्ति नाश स्थिति कहे।।
सब द्रव्यों की पर्यायों को, यह वर्णे इसको पूजूँ मैं।
इसमें पद एक करोड़ कहे, वंदत भव दुःख से छूटूँ मैं।।20।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-उत्पादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्रायणीय पूरब दूजा, यह सुनय सात सौ अरु दुर्नय।
छह द्रव्य पदार्थों को वर्णे, इसमें पद छ्यानवे लाख अभय।।
इस द्वितिय पूर्व को पूजूँ मैं, इसका कुछ अंश आज भी है।
षट्खण्डागम जो सूत्रग्रंथ, उन भक्ती भवभय हरती है।।21।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अग्रायणीयपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर्यानुवाद है तृतिय पूर्व, यह आत्मवीर्य परवीर्यों को।
तपवीर्यादिक को कहता है, पद सत्तर लाख इसी में हों।।
इसकी भक्ती से शक्ति बढ़े, फिर युक्ति मिले शिवमारग की।
फिर ज्ञान पूर्ण हो मुक्ति मिले, मैं पूजा करूँ सतत इसकी।।22।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतवीर्यानुप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व, स्वद्रव्य क्षेत्र कालादिक से।
सब वस्तू का अस्तित्व कहे, नास्तित्व अन्यद्रव्यादिक से।।
यह दुर्नय का खंडन करके, नय द्वारा विधि प्रतिषेध कहे।
इसमें पद साठ लाख मानें, इसको पूजत सम्यक्त्व लहे।।23।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अस्तिनास्तिप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो ज्ञानप्रवाद नाम पूरब, प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाणों का।
मतिश्रुत अवधी मनपर्यय अरु, केवल इन पांचों ज्ञानों का।।
बहुभेद प्रभेद सहित वर्णे, इसको पूजत हो ज्ञान पूर्ण।
इसमें पद इक कम एककोटि, इस वंदत हो अज्ञान चूर्ण।।24।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतज्ञानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह सत्य प्रवाद पूर्व दशविध, सत्यों का वर्णन करता है।
यह सप्तभंग से सब पदार्थ का, सुन्दर चित्रण करता है।।
इसके पूजन से झूठ कपट, दुर्भाषायें नश जाती हैं।
पद एक कोटि छह हैं पूजूँ, दिव्यध्वनि वश हो जाती हैं।।25।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतसत्यप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आत्मा निश्चय से शुद्ध कहा, फिर भी अशुद्ध संसारी है।
व्यवहार नयाश्रित ही कर्मों का, कर्ता है भवकारी है।।
यह आत्मप्रवाद पूर्व कहता, इसमें पद छब्बिस कोटि कहे।
इसको पूजत ही आत्मनिधी, मिलती है जो भव दुःख दहे।।26।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-आत्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह कर्मप्रवाद पूर्व नाना, विध कर्मों का वर्णन करता।
ईर्यापथ कर्म कृतीकर्मों को, अधःकर्म को भी कहता।।
इसमें पद एक करोड़ लाख, अस्सी हैं इसको पूजूँ मैं।
निज पर का भेद ज्ञान करके, इन आठ करम से छूटूँ मैं।।27।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतकर्मप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, वह द्रव्य क्षेत्र कालादिक से।
नियमित व अनियमित कालों तक, बहुत्याग विधी को बतलाके।।

वस्तू सदोष का त्याग करो, निर्दोष वस्तु भी तप रुचि से।
पद हैं चौरासी लाख कहें, पूजूँ इसको मैं बहु रुचि से।।28।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतप्रत्याख्यानप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह विद्यानुप्रवाद रोहिणी, आदिक महविद्या पांच शतक।
अंगुष्ठ प्रसेनादिक विद्या, मानी हैं लघु ये सात शतक।।
इनके सब साधन विधी आदि को, वर्णे इसको जजूँ यहाँ।
पद एककोटि दश लाख कहे, इस पढ़ च्युत हों कुछ साधु यहाँ।।29।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतविद्यानुप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल्याणप्रवाद पूर्व वर्णे, शशि सूर्य ग्रहादिक गमन क्षेत्र।
अष्टांग महान निमित्तादिक, पद इसमें छब्बिस कोटि मात्र।।
तीर्थंकर के कल्याणक को, चक्री आदिक के वैभव को।
यह कहता इसको पूजें हम, इससे कल्याण हमारा हो।।30।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतकल्याणप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह प्राणावाय प्रवाद पूर्व, इंद्रिय बल आयु उच्छ्वासों का।
अपघात मरण अरु आयुबंध, आयू अपकर्षण आदी का।।
यह आयुर्वेद के अष्ट अंग, का विस्तृत वर्णन है करता।
इसमें पद तेरह कोटि इसे, पूजत ही स्वास्थ्य लाभ मिलता।।31।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतप्राणावायप्रवादपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नृत्यशास्त्र संगीतशास्त्र, व्याकरण छंद अरु अलंकार।
पुरुषादी के लक्षण कहता, जिसमें नवकोटी पद विचार।।
सो है किरिया विशाल पूरब, इसको जो रुचि से भजते हैं।
वे सब शास्त्रों में हों प्रवीण, फिर स्वपर भेद को लभते हैं।।32।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतक्रियाविशालपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परिकर्म और व्यवहार रज्जु-राशी गुणकार वर्ग घन को।
बहु बीजगणित को भी वर्णे, कहता है मुक्ती स्वरूप को।।
पद बारह कोटि पचास लाख, इसको पूजूँ ले अर्घ भले।
यह लोकविंदुसार पूरब, इसके वंदत लोकाग्र मिले।।33।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतलोकविंदुसारपूर्वाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ षष्ठदले पुष्पांजलिः

दृष्टिवाद का भेद चूलिका, पांच भेद भी उसके हैं।
जलगता प्रथम जल में स्थलवत्, चलना इत्यादिक वर्णे हैं।।
जलस्तंभन के मंत्र तंत्र तप, आदि अग्नि भक्षण आदिक।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, सहस द्विशत पूजूँ नितप्रति।।34।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतजलगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्थलगता चूलिका है, मेरू कुलपर्वत क्षेत्रों को।
उन पर गमनादिक मंत्र तंत्र, तप आदिक बहुविधि कहती वो।।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ इसमें हैं।
इसको पूजूँ मैं अर्घ लिये, यह साधन भवदधि तरने में।।35।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतस्थलगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो मायागता चूलिका वह, माया का खेल सिखाती है।
बहु इन्द्रजाल क्रीड़ाओं की, मंत्रादि विधी बतलाती है।।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ इसमें हैं।
मैं जजूँ इसे यह कुशल सदा, सब जग की माया हरने में।।36।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतमायागताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह रूपगता चूलिका सिंह, गज घोड़ा मनुजादिक बहुविध।
रूपों को धरने के मंत्रों, तप आदिक को वर्णे नितप्रति।।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ माने हैं।
मैं जजूँ मिले मुझ आत्मरूप, मुझको पररूप हटाने हैं।।37।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतरूपगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकाशगता चूलिका सदा, नभ में गमनादि सिखाती है।
बहु विध के मंत्र तंत्र तप के, साधन की विधी बताती है।।
पद दो करोड़ नव लाख नवासी, हजार दो सौ हैं वर्णे।
मैं इस आशा से जजूँ मिले, मुझ लोकाकाश अग्र क्षण में।।38।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-आकाशगताचूलिकायै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ सप्तमदले पुष्पांजलिः

–दोहा –

अंगबाह्य के भेद हैं, चौदह शास्त्र प्रसिद्ध।
नाम प्रकीर्णक से यही, सामायिक आदीक।।

–रोला छंद –

नियत काल सामायिक, त्रय संध्या में करना।
अनियत काल सदैव, रागद्वेष परिहरना।।
समताभावस्वरूप, सामायिक कहता है।
प्रथम प्रकीर्णकरूप, जजें मोक्ष मिलता है।।39।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य सामायिकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसों तीर्थेश, इनकी स्तुति वंदन का।
उसका फल वर्णेय, वही प्रकीर्णक दूजा।।
जिन प्रतिमा जिनयज्ञ, बहुविधान यह वर्णे।
मैं पूजूँ बहु भक्ति, जिनवर की ले शरणे।।40।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य चतुर्विंशतिस्तव-प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर या जिनगेह, एक एक का वंदन।
सिद्ध वंदना येह, करता पाप निकंदन।।
वंदन विधि फल आदि, सबका वर्णन करता।
पूजूँ मन-वच-काय, महापुण्य यह भरता।।41।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य वंदनाप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिवस रात्रि अरु पक्ष, चातुर्मास संवत्सर।
ईर्यापथ उत्तमार्थ, इन सबका आश्रय कर।।

प्रतिक्रमण के सात, भेदों का बहु वर्णन।
प्रतिक्रमण यह नाम, पूजूँ शुचिकर तन मन।।42।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य प्रतिक्रमणप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र, तप उपचार विनय हैं।
इनके लक्षण भेद, फल आदिक वर्णन है।।
नाम वैनयिक येह, पंचम भेद कहाता।
पूजूँ भक्ति समेत, मिले सर्व सुख साता।।43।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य वैनयिकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो स्वाधीन करेय, प्रदक्षिणा त्रय अवनति।
त्रय उपवेशन और, भक्त्या चार शिरोनति।।
द्वादश हों आवर्त, बहु कृतिकर्म विधी से।
जिन सिद्धादि नमेय, जजूँ इसे बहुरुचि से।।44।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य कृतिकर्मप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशवैकालिक ग्रंथ, मुनि के आचारों को।
भिक्षाटन विधि आदि, चर्या उसके फल को।।
वर्णे बहुत विशेष, उसे जजूँ मन वच तन।
जिन सूत्रों की भक्ति, करे ज्ञान का वर्धन।।45।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य दशवैकालिकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार तरह उपसर्ग, बाइस परिषह आदिक।
इनका सहन विधान, फल शिव या स्वर्गादिक।।
इन सबको वर्णेय, उत्तराध्ययन वही है।
पूजूँ धर मन नेह, मिलती सौख्य मही है।।46।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य उत्तराध्ययनप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषियों को यदि दोष, लगे व्रतादिक में जो।
प्रायश्चित विधान, बहुविध से वर्णे जो।।
कहा कल्प्यव्यवहार, सूत्र प्रकीर्णक नामा।
पूजूँ रुचि मन धार, मिले शीघ्र शिवरामा।।47।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य कल्प्यव्यवहारप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधू के यह योग्य, यह अयोग्य इस विध से।
द्रव्य क्षेत्र अरु काल, भाव निमित इन धर के।।
कल्प्याकल्प्य सुनाम, इन सबको कहता है।
पूजूँ करूँ प्रणाम, मन पावन करता है।।48।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य कल्प्याकल्प्यप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा शिक्षा संघ, पोषण निजसंस्कारा।
सल्लेखन उतमार्थ, मुनि के छहों प्रकारा।।
द्रव्यादी के निमित्त, इन सबको वर्णे जो।
महाकल्प्य वह सूत्र, जजूँ भक्ति धर उसको।।49।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य महाकल्प्य–प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चउविध देव व इंद्र, सामानिक इत्यादी।
इनके सुख विभवादि, इनके कारण आदी।।
पूजा दान तपादि, इन सबको कहता जो।
पुंडरीक है नाम, जजूँ नमाकर शिर को।।50।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य पुंडरीकप्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव देवियों आदि, के उपपाद इत्यादी।
तप शीलादि निमित्त, कहें सदा सुख आदी।।

महापुंडरीकास्य, वर्णन करे निरन्तर।
पूजूँ भक्ति संभाल, मिले शीघ्र शिवसुन्दर।।51।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य महापुंडरीक–प्रकीर्णकश्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ऋषिगण के बहुभेद, युत प्रायश्चित वर्णे।
निषिद्धिका है नाम, मुनिचर्या को वर्णे।।
चौदहवाँ अंगबाह्य, भेद प्रकीर्णक माना।
पूजूँ भक्ति बढ़ाय, मिले शीघ्र निजधामा।।52।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गत-अंगबाह्यस्य निषिद्धिकाप्रकीर्णक-श्रुताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य (शंभु छंद)–

यह द्वादश अंग व अंगबाह्य, इन रूप दिव्यध्वनि जिनवर की।
हैं जितने जैनशास्त्र अब भी, सब साररूप ध्वनि जिनवर की।।
गंगा का जल घट में भर लें, वैसे हि ग्रन्थ जिनवर वाणी।
मैं पूजूँ पूरण अर्घ लिये, इस युग में यह ही कल्याणी।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतद्वादशांग-अंगबाह्यस्य सर्वश्रुतज्ञानाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ अष्टमदले पुष्पांजलिः

–दोहा–

सर्ववाङ्मय में कहे, चार अनुयोग प्रसिद्ध।
प्रथम करण अरु चरण अरु, द्रव्य नाम से सिद्ध।।1।।

–शंभु छंद–

जो धर्म अर्थ अरु काम मोक्ष, पुरुषार्थ कहे अरु चरित कहे।
त्रेसठ शलाका पुरुषों के, आदर्श महान पुराण कहे।।

वह पुण्य रूप है रत्नत्रयमय, बोधि समाधि निधान महा।
मैं पूजूँ उसको उस ही का, प्रथमानुयोग यह नाम कहा।।53।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतप्रथमानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो लोक अलोक विभाग कहे, षट्काल परावर्तन कहता।
चारों गति के संसरण कहें, भव पंच परावर्तन कहता।।
दर्पण समान वह त्रिभुवन का, सब चित्त सामने झलकाता।
मैं जजूँ उसे करणानुयोग यह, नाम धरे भवि सुखदाता।।54।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतकरणानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक मुनि के आचाररूप, चारित्र सही जो बतलाता।
उसकी उत्पत्ती वृद्धी औ, रक्षा के साधन सिखलाता।।
चरणानुयोग है शास्त्र वही, जो मोक्ष महल में चढ़ने को।
चरणों को रखने हेतु सहज, सोपानरूप पूजूँ इसको।।55।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतचरणानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो जीव-अजीव सुतत्त्वों को, अरु पुण्य-पाप को बतलाता।
आस्रव-संवर अरु बंध-मोक्ष, तत्त्वों को विधिवत् समझाता।।
वह दीपसदृश द्रव्यानुयोग, द्रव्यों को प्रकट दिखाता है।
श्रुतविद्या का सुन्दर प्रकाश, मैं जजूँ इसे सुखदाता है।।56।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतद्रव्यानुयोगसम्यग्ज्ञानाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य-दोहा–

शीतल तीर्थंकर वचन, शीतलदायी मान्य।
पूर्ण अर्घ्य ले मैं जजूँ, पाऊँ निजसुख साम्य।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथमुखकमलविनिर्गतचतुरनुयोगसम्यग्ज्ञानेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्यपुष्पांजलिः।

अथ नवमदले पुष्पांजलिः

(108 अर्घ्य)

–दोहा–

श्रीशीतल जिनराज के, गुण अनंत अभिराम।
कतिपय गुण को मैं जजूं, शत शत करूं प्रणाम।।1।।

।।अथ मंडलस्योपरि नवमदले पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

ॐ ह्रीं शुक्लध्यानबलेन कर्मनिर्मूलसमर्थाय योगिगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

ॐ ह्रीं धर्मश्रवणमुखकमलविकसितबुद्धिप्रदाय प्रव्यक्तनिर्वेदगुण–समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।2।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषविवर्जितसमताभावप्रापणकराय साम्यारोहणतत्परगुण–विशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।3।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवसमपरिणामपरिणताय सामयिकिगुणविशिष्टाय श्रीशीतल–नाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।4।।

ॐ ह्रीं सर्वसावद्ययोगविरतिलक्षणैकचारित्रप्राप्ताय सामायिकगुण–समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

ॐ ह्रीं विकथाकषायेन्द्रियविषयादिप्रमादविरहिताय निःप्रमादगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

ॐ ह्रीं निश्चयप्रतिक्रमणरूपध्यानलीनपदप्रदाय अप्रतिक्रमगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

ॐ ह्रीं सर्वसावद्ययोगविरहितपदप्रदाय यमगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ–तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

ॐ ह्रीं मोक्षपदप्राप्तिसाधनभूतप्रमुखनियमानुष्ठानधारकाय प्रधाननियम–गुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

ॐ ह्रीं अतिशयाभ्यस्तपद्मासनधारकाय स्वभ्यस्तपरमासनगुण–समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

ॐ ह्रीं कुंभक–पूरक–रेचकादिलक्षणवायुप्रचारप्रवीणाय प्राणायामगुण–समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियविषयव्यापारेभ्यो मनोव्यावृत्य–ललाटे अर्हं बीजाक्षर–स्थापनविधिप्रतिपादकाय सिद्धप्रत्याहारगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियविषयविरतस्वात्मतत्त्वतन्मयाय जितेन्द्रियगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

ॐ ह्रीं पार्थिवी–आग्नेयी–मारुती–वारुणी–तात्त्विकीपंचविध–धारणा–धारक–योगिगणीश्वराय धारणाधीश्वरगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

ॐ ह्रीं व्यवहारनिश्चयधर्मध्यानप्रतिपादकाय धर्मध्याननिष्ठगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।15।।

ॐ ह्रीं शुक्लध्यानबलेन केवलज्ञानप्राप्ताय समाधिराट्गुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।16।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवशुद्धबुद्धस्वभावरूपसाम्यभावपरिणताय स्फुरत्समरसी–भावगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

ॐ ह्रीं संकल्पविकल्पविरहितैकाद्वितीयात्मस्वरूपप्राप्ताय एकाकिगुण–समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।18।।

ॐ ह्रीं पंचेन्द्रियमनोवशीकरणसमर्थाय अधःकरणापूर्वकरणानिवृत्तिकर–णपरिणामप्रापणविधिप्रतिपादनाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।19।।

ॐ ह्रीं पुलाक–वकुश–कुशील–निर्ग्रंथ–स्नातकनामपंचविधनिर्ग्रंथमुनीनां स्वामिने निर्ग्रंथनाथगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।20।।

ॐ ह्रीं सम्पूर्णपरिग्रहविरहितसाधुगणस्वामिने योगीन्द्रगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।21।।

ॐ ह्रीं चतुषष्टि–ऋद्धिसमन्विताय ऋषिगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ–तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।22।।

ॐ ह्रीं मोक्षकारणभूतव्यवहाररत्नत्रयधर्मप्रतिपादकाय साधुगुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।23।।

ॐ ह्रीं उभयविधोपशमक-क्षपकश्रेण्यारोहणविधिप्रतिपादकाय यतिगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।24।।

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानेन चराचरजगज्ज्ञात्रे मुनिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।25।।

ॐ ह्रीं ऋद्धिसंपन्नर्षीणामपि प्रमुखपदप्राप्ताय महर्षिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।26।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयधारिसाधुगणाग्रेसराय साधुधौरेयगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।27।।

ॐ ह्रीं निष्कषायानां स्वामिने यतिनाथगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।28।।

ॐ ह्रीं प्रत्यक्षज्ञानिनां स्वामिपदप्राप्ताय महामुनिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।29।।

ॐ ह्रीं वचनगुप्तिबलेन दिव्यध्वनिवचनप्राप्ताय महामुनीश्वरगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

ॐ ह्रीं छद्मस्थावस्थायां वाचंयमधारकाय महामौनिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।31।।

ॐ ह्रीं धर्म्यशुक्लध्यानबलेन कर्मेन्धननाशसमर्थाय महाध्यानिगुण-विशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

ॐ ह्रीं महापुरुषानुष्ठानयोग्यमहद्व्रतप्रतिपादकाय महाव्रतिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

ॐ ह्रीं अन्यजनासाधारणक्षमागुणधारकाय महाक्षमगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।34।।

ॐ ह्रीं अष्टादशोत्तरसहस्रभेदयुक्तब्रह्मचर्यप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।35।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषमोहरूपकषायशांतकराय महाशान्तगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।36।।

ॐ ह्रीं इन्द्रियदमन-तपःक्लेशसहिष्णुताबलेन स्वात्मपदप्राप्ताय महादमगुण-समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।37।।

ॐ ह्रीं कर्ममलकलंकलेपविरहिताय निर्लेपगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।38।।

ॐ ह्रीं संशय-विपर्यय-अनध्यवसायरहिताय निर्भ्रमस्वान्तगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।39।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रयस्वरूपधर्म-अहिंसापरमधर्म-दशधर्माणामधिकारपूर्वक-प्रतिपादनदक्षाय धर्माध्यक्षगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।40।।

ॐ ह्रीं करुणामार्ग-गमनसमर्थयोगिजनहृदयस्थिताय ब्रह्मयोनिगुण-समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।41।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मशब्देनात्माज्ञानमोक्षचारित्राणामुत्पत्तिस्थानभूताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।42।।

ॐ ह्रीं गुरुमन्तरेण निर्वेदप्राप्ताय स्वयंबुद्धगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

ॐ ह्रीं स्वात्मतत्त्वज्ञात्रे ब्रह्मज्ञगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मशब्देन मोक्ष-ज्ञान-तपश्चारित्रस्वरूपवेदिने ब्रह्मतत्त्वविद्गुण समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

ॐ ह्रीं कर्ममलकलंकरहितपवित्रात्मे पूतात्मगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

ॐ ह्रीं द्रव्यकर्म-भावकर्म-नोकर्मविरहिताय स्नातकगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

ॐ ह्रीं अभयदानस्वभावाय दान्तगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

ॐ ह्रीं इन्द्रचन्द्रधरणेन्द्रमुनीन्द्रादीनां पूज्यपर्यायप्राप्ताय भदन्तगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।49।।

ॐ ह्रीं शुभकर्मद्वेषकरभावविवर्जिताय वीतमत्सरगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।50।।

ॐ ह्रीं स्वर्गमोक्षफलप्रदायक-कर्मशत्रुनिपातप्रहरणधारकाय धर्मवृक्षायुध-गुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।51।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यक्षोभकारिवज्राग्निदिभिरपि चारित्राच्चालयितुमशक्य-शक्तिप्राप्ताय अक्षोभ्यगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।52।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवपवित्रकारणदक्षाय प्रपूतात्मगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।53।।

ॐ ह्रीं भव्यजीवानां मोक्षोत्पत्तिकारणसमर्थाय अमृतोद्‌भवगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।54।।

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणमित्यादिसप्ताक्षरमंत्रस्वरूपाय मंत्रमूर्तिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।55।।

ॐ ह्रीं स्वयमेव परमसमरसीभावस्वरूपाय स्वसौम्यात्मगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।56।।

ॐ ह्रीं पराधीनशरीरविरहिताय स्वतंत्रगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।57।।

ॐ ह्रीं ब्रह्मस्वरूप-निश्चयचारित्रोत्पत्तिकारकाय ब्रह्मसंभवगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।58।।

ॐ ह्रीं अतिशयप्रहसितवदन-स्वर्मोक्षदायकाय सुप्रसन्नगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।59।।

ॐ ह्रीं अनन्तकेवलज्ञानदर्शनवीर्यसौख्यसम्यक्त्वास्तित्व-प्रमेयत्व-चैतन्या-द्यनन्तगुणसमुद्राय गुणाम्भोधिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।60।।

ॐ ह्रीं शुभाशुभास्रवनिरोधरूपपूर्णसंवरप्राप्ताय पुण्यापुण्यनिरोधकगुण-समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।61।।

ॐ ह्रीं आत्मतत्त्वस्वरूपस्थितसंवरगुणपूर्णाय सुसंवृतगुणधारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।62।।

ॐ ह्रीं स्वात्मस्थितसर्वप्रकारसुरक्षिताय सुगुप्तात्मगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।63।।

ॐ ह्रीं कर्मांजनविरहितकृतकृत्याय सिद्धात्मगुणप्राप्ताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।64।।

ॐ ह्रीं सर्वोपद्रवनिवारकाय निरूपप्लवगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।65।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मनिर्मोक्षजातानन्तकेवलज्ञानादिलक्षणोत्तरफलप्राप्ताय महोदर्कगुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।66।।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रलक्षणमोक्षोपायप्रतिपादकाय महोपायगुण-समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।67।।

ॐ ह्रीं अधोमध्योर्ध्वस्थितभव्यलोकैकाद्वितीयजनकस्वरूपपरमहित-कारकाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।68।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवदयालक्षणधर्मोपदेशकाय परमकारुणिकगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।69।।

ॐ ह्रीं चतुरशीतिलक्षोत्तरगुणधारकाय गुण्यगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।70।।

ॐ ह्रीं तपः संयमपरीषहसहनादिक्लेशलक्षणांकुशेन मनोमत्तगजोन्मार्ग-निरोधकाय महाक्लेशांकुशगुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।71।।

ॐ ह्रीं जन्मकालादेव मलमूत्रादिरहित-शुद्धबुद्धैकस्वभावरूपपरमपवित्र-तीर्थाय शुचिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।72।।

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिभेदभिन्नमोहमहाशत्रुविजयकराय अरिंजयगुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।73।।

ॐ ह्रीं सर्वकालालब्धलाभलक्षणपरमशुक्लध्यानधारकाय सदायोगगुण-समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।74।।

ॐ ह्रीं सर्वकालनिजशुद्धबुद्धैकस्वभावपरमात्मैकलोलीभावलक्षणपरमानंदा-मृतरसास्वादस्वभावभोगप्राप्ताय सदाभोगगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।75।।

ॐ ह्रीं सर्वकालपरमधैर्यधारकाय सदाधृतिगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।76।।

ॐ ह्रीं शत्रु-मित्र-तृण-कांचनादिषु परममध्यस्थभावप्राप्ताय परमौदासितृ-गुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।77।।

ॐ ह्रीं कवलाहाररहिताय शाश्वतकल्याणमार्गारूढाय अनाश्वान्गुण समन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।78।।

ॐ ह्रीं अभयदानरूपसफलाशीर्वादप्रदाय सत्याशीःगुणमंडिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।79।।

ॐ ह्रीं रागद्वेषमोहशान्तकारिसाधुगणस्वामिने शान्तनायकगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।80।।

ॐ ह्रीं जन्मप्रभृत्यपि व्याधितप्राणिनां नाममात्रेण सर्वव्याधिविनाशनसमर्थाय-जन्मजरामरणभवरोगमूलादुन्मूलनकुशलाय अपूर्ववैद्यगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।81।।

ॐ ह्रीं निर्विकल्पसमाधिलक्षणशक्लध्यानध्यात्रे योगज्ञगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।82।।

ॐ ह्रीं परमचारित्रलक्षणस्वरूपाय धर्ममूर्तिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।83।।

ॐ ह्रीं हिंसादिलक्षणपापभस्मीकरणकुशलाय अधर्मधग्गुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।84।।

ॐ ह्रीं स्वात्मज्ञाननिष्ठाय ब्रह्मेड्गुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।85।।

ॐ ह्रीं पंचमकेवलज्ञानपतये महाब्रह्मपतिगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।86।।

ॐ ह्रीं संपूर्णीकृतसर्वात्मकार्याय कृतकृत्यगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।87।।

ॐ ह्रीं इन्द्रादिभिः पूजाप्राप्ताय कृतक्रतुगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।88।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानाद्यनन्तगुणोत्पत्तिनाथाय गुणाकरगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।89।।

ॐ ह्रीं क्रोधादिविभावभावविनाशनाय गुणोच्छेदिगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।90।।

ॐ ह्रीं नेत्रमेषोन्मेषरहितदिव्यनेत्राय निर्निमेषगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।91।।

ॐ ह्रीं गृहपरिकराद्याश्रयविगताय निराश्रयगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।92।।

ॐ ह्रीं सर्वोच्चबुद्धिजनकाय सूरिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।93।।

ॐ ह्रीं स्यात्कारशब्दोपलक्षितसुनयमर्मप्रतिपादकाय सुनयतत्त्वज्ञगुण-विशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।94।।

ॐ ह्रीं सर्वजीवजीवनबुद्धिप्रदायकाय महामैत्रीमयगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।95।।

ॐ ह्रीं सर्वकर्मोपशामनविधिविधायकाय शमिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।96।।

ॐ ह्रीं प्रकर्षरूपकर्मबंधविनष्टाय प्रक्षीणबन्धगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।97।।

ॐ ह्रीं असहिष्णुभावोत्पन्नकलहविरहिताय निर्द्वन्द्वगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।98।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानर्द्धिप्राप्ताय महर्षिगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।99।।

ॐ ह्रीं पुनरागमनविरहितमोक्षधामप्राप्ताय अनन्तगगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।100।।

ॐ ह्रीं शुद्धस्वरूपविनाशविरहिताय अव्ययगुणविशिष्टाय श्रीशीतलनाथ-तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।101।।

ॐ ह्रीं अनादिकालीनसर्वोत्कृष्टस्थानस्थिताय पुराणपुरुषगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।102।।

ॐ ह्रीं अहिंसालक्षणसर्वोत्कृष्ट–धर्मप्रवर्तकाय धर्मसारथिगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।103।।

ॐ ह्रीं परमकल्याणदायकतीर्थंकरनामगोत्रकारकस्तुतिप्राप्ताय शिव–कीर्तनगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।104।।

ॐ ह्रीं लोकजीवकारिक्रियोपदेशकाय विश्वकर्मगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथ–तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।105।।

ॐ ह्रीं आत्मन्येकलोलीभावरूपाच्यवनस्वरूपाय अक्षरगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।106।।

ॐ ह्रीं छद्म–ज्ञानावरणदर्शनावरणकर्मविघातकाय अच्छद्मगुणविभूषिताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।107।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञानापेक्षया विश्वव्याप्ताय विश्वभू-गुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथ–तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।108।।

पूर्णार्घ्य–गीताछंद

शीतल जिनेश्वर! आप वृद्धिंगत गुणों के नाथ हो।
सौ इन्द्र नितप्रति भक्ति श्रद्धा, से नमाते माथ को।।
निज आत्म का दर्शन कराया, पथ दिखाया विश्व को।
पूर्णार्घ्य से हम पूजते, निज आत्म संपति प्राप्त हो।।1।।

ॐ ह्रीं योगिगुणादि-अष्टोत्तरशतगुणसमन्विताय श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।।1।।

शान्तये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिं।

जाप्य मंत्र—**ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय नमः।**

जयमाला

–दोहा–

अति अद्भुत लक्ष्मी धरें, समवसरण प्रभु आप।
तुम ध्वनि सुन भविवृंद नित, हरें सकल संताप।।1।।

–शंभु छंद–

जय जय शीतल जिन का वैभव, अंतर का अनुपम गुणमय है।
जो दर्शज्ञान सुख वीर्यरूप, आनन्त्य चतुष्टय गुणमय है।।
बाहर का वैभव समवसरण, जिसमें असंख्य रचना मानी।
गुरु गणधर भी वर्णन करते, थक जाते मनपर्यय ज्ञानी।।2।।

यह समवसरण की दिव्य भूमि, इक हाथ उपरि पृथ्वी तल से।
सीढ़ी से ऊपर अधर भूमि, यह तीस कोश की गोल दिखे।।
यह भूमि कमल आकार कही, जो इन्द्रनीलमणि निर्मित है।
है गंधकुटी इस मध्य सही, जो कमल कर्णिका सदृश है।।3।।

पंकज के दल सम बाह्य भूमि, जो अनुपम शोभा धारे है।
इस समवसरण का बाह्य भाग, दर्पण तल सम रुचि धारे है।।
यह बीस हजार हाथ ऊँचा, शुभ समवसरण अतिशय शोभे।
एकेक हाथ ऊँची सीढ़ी, सब बीस हजार प्रमित शोभें।।4।।

अंधे पंगू रोगी बालक, औ वृद्ध सभी जन चढ़ जाते।
अंतर्मुहूर्त के भीतर ही, यह अतिशय जिन आगम गाते।।
इसमें शुभ चार दिशाओं में, अति विस्तृत महा वीथियाँ हैं।
वीथी में मानस्तंभ कहे, जिनकी कलधौत पीठिका हैं।।5।।

जिनवर से बारह गुणे तुंग, बारह योजन से दिखते हैं।
इनमें हैं दो हजार पहलू, स्फटिक मणी के चमके हैं।।
उनमें चारों दिश में ऊपर, सिद्धों की प्रतिमाएँ राजें।
मानस्तंभों की सीढ़ी पर, लक्ष्मी की मूर्ति अतुल राजें।।6।।

ये दूर-दूर तक गाँवों में, अपना प्रकाश फैलाते हैं।
जो इनका दर्शन करते हैं, वे निज अभिमान गलाते हैं।।
मानस्तंभों के चारों दिश, जलपूरित स्वच्छ सरोवर हैं।
जिनमें अतिसुंदर कमल खिले, हंसादि रवों से मनहर हैं।।7।।

प्रभु समवसरण में इक्यासी, गणधर सप्तर्द्धि समन्वित हैं।
सब एक लाख मुनिराज वहाँ, मूलोत्तर गुण से मंडित हैं।।

गणिनी धरणाश्री तीन लाख, अस्सी हजार आर्यिका कही।
श्रावक दो लाख श्राविकाएँ, त्रय लाख भक्ति में लीन रहीं।।8।।

नब्बे धनु तुंग देह स्वर्णिम, इक लाख पूर्व वर्षायू थी।
है कल्पवृक्ष का चिन्ह प्रभो! दशवें तीर्थंकर शीतल जी।।
चिंतित फलदाता चिंतामणि, वांछित फलदाता कल्पतरू।
मैं पूजूँ ध्याऊँ गुण गाऊँ, निज आत्म सुधा का पान करूँ।।9।।

हे नाथ! कामना पूर्ण करो, निज चरणों में आश्रय देवो।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, तब तक ही शरण मुझे लेवो।।
तब तक तुम चरण कमल मेरे, मन में नित सुस्थिर हो जावें।
जब तक नहिं केवल 'ज्ञानमती', तब तक मम वच तुम गुण गावें।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकराय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेरछंद –

जो भव्य शीतलनाथ का विधान करेंगे।
प्रभु दिव्यध्वनि द्वादशांग वाणि नमेंगे।।
संसार परिभ्रमण का संताप हरेंगे।
निज 'ज्ञानमती' पूर्णकर भगवान बनेंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः।।

प्रशस्ति

–दोहा –

तीर्थंकर चक्री मदन, त्रयपद धारी ईश।
शांतिनाथ भगवान को, नमूँ-नमूँ नत शीश।।1।।

कुंथुनाथ-अरनाथ प्रभु, तीन-तीन पद नाथ।
इनके श्री चरणाब्ज को, नमूँ नमाकर माथ।।2।।

वर्तमान में वीर प्रभु, शासनपति भगवान।
इनके शासन में हुये, बहु आचार्य महान।।3।।

मूल-संघ में कुंदकुंद गुरु, अन्वय सरस्वति गच्छ।
बलात्कार गण में हुए , सूरि नमूँ मन स्वच्छ।।4।।

सदी बीसवीं के प्रथम, गुरु दिगंबराचार्य।
चरित चक्रवर्ती श्री, शांतिसागराचार्य।।5।।

इनके शिष्योत्तम श्री, वीरसागराचार्य।
पहले पट्टाचार्य गुरु, नमूँ भक्ति उर धार्य।।6।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, चालिस जगत्प्रसिद्ध।
पौष कृष्ण चौदश तिथी, हस्तिनागपुर तीर्थ।।7।।

मैंने गणिनी ज्ञानमती, किया विधान प्रपूर्ण।
शीतलनाथ विधान यह, भरे सौख्य संपूर्ण।।8।।

जब तक जम्बूद्वीप की, कीर्ति जगत् में व्याप्त।
तब तक ''ज्ञानमती'' कृती, रहे विश्व विख्यात।।9।।

(इति श्रीशीतलनाथविधानं संपूर्णम्)

वर्द्धतां जिनशासनं।

भद्रिकापुरी तीर्थ पूजा

—प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

स्थापना (बसन्ततिलका छन्द)

शीतल जिनेन्द्र जन्मस्थल को जजूँ मैं।
श्री भद्रिकापुरी पुण्यस्थल भजूं मैं।।
आह्वाननं कर यहाँ प्रभु को बुलाऊँ।
उन जन्मभूमि की पूजा भी रचाऊँ।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

अष्टक (शंभु छन्द)

सुरगंगा के प्रासुक जल से, सोने का कलशा भर लाया।
पूजा में सहज चढ़ाने को, मेरे अन्तर्मन में आया।।
अध्यात्म सुधारस पीकर के, भव भव की तृषा बुझाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय जन्म-जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु वचनों सम शीतल चंदन, घिसकर कर्पूर मिला लाया।
तीरथ पद में चर्चन करने का, भाव सहज मन में आया।।
अपनी आत्मा में शीतलता का, भाव प्रगट करवाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु गुण सम धवल सुअक्षत के, पुंजों को मैं धोकर लाया।
पूजा में पुंज चढ़ाने को, मेरा अन्तर्मन हरषाया।।

निज शुद्ध अखंड प्राप्ति हेतु, अक्षत के पुंज चढ़ाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अक्षय-पदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर कीर्ति सम पुष्पों से, पूजन का भाव हृदय आया।
अंजलि में भरकर पुष्प विविध, पुष्पांजलि मैंने बिखराया।।
हो नष्ट काम की व्यथा मेरी, आतमगुण को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर भावामृत पिण्ड सदृश, नैवेद्य सरस बनवाया है।
पावन रज की पूजन हेतू, भक्ति से चरू चढ़ाया है।।
क्षुधरोग विनाशन हो मेरा, इस चिन्तन को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।5।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के कैवल्यसूर्य सम, जगमगता दीपक लाया।
मन से प्रभु जन्मस्थल जाकर, आरति करके अति हर्षाया।।
कर मोह नाश निज आत्मा में, केवल रवि को प्रगटाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।6।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर गुण सुरभि सदृश मैंने, चंदनयुत धूप बनाई है।
कर्मों के विध्वंसन हेतु, अग्नी में धूप जलाई है।।
सब कर्ममलों से रहित शुद्ध, क्षायिकगुण मुझको पाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।7।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज परमभाव सम सुखदायी, अमृतफल लेकर आया हूँ।
कर ध्यान प्रभू जन्मस्थल का, फल अर्पित करने आया हूँ।।
ज्ञानामृत फल आस्वादन कर, क्रम से शिवफल भी पाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरू, वर दीप धूप फल ले आया।
आठों द्रव्यों में रत्न मिला, ''चंदनामती'' मन हरषाया।।
प्रभु सम अनर्घ्य पद प्राप्ति हेतु, तीरथ को अर्घ्य चढ़ाना है।
शीतल जिनवर की जन्मभूमि, भद्रिकापुरी यश गाना है।।9।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

भद्दिलपुर शुभ तीर्थ की, पूजा है सुखकार।
निज पर शांति के लिए, कर लूँ शांतीधार।।10।।

शांतये शान्तिधारा।

तीर्थंकर शीतलप्रभू, का उद्यान विशाल।
वही पुष्प अंजलि भरूँ, अर्पूं होउँ खुशाल।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

भद्रिकापुरी तीर्थ के *अर्घ्य (शंभु छंद)*

जहाँ मात सुनन्दा ने महलों में, सोलह सपने देखे थे।
शुभ चैत्र कृष्ण अष्टमि तिथि थी, पति से उनके फल पूछे थे।।
उस गर्भकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
अब गर्भवास दुख प्राप्त न हो, ऐसा अनुरोध हमारा है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथगर्भकल्याणकपवित्रभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

राजा दृढ़रथ के यहाँ माघ, कृष्णा द्वादशि को प्रभु जन्मे।
देवों के आसन कांप उठे, वे सब भद्रिकापुरी पहुँचे।।
उस जन्मकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
अब पुनर्जन्म दुख प्राप्त न हो, ऐसा अनुरोध हमारा है।।2।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मकल्याणकपवित्रभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ब्याह किया औ राज्य किया, शीतल प्रभु ने राजा बनकर।
फिर जन्मतिथी में ही दीक्षा, लेने चल दिये राज्य तजकर।।
उस तपकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
प्रभु सम दीक्षा का योग मिले, ऐसा अनुरोध हमारा है।।3।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथदीक्षाकल्याणकपवित्रभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तिथि पौष वदी चौदश को जहाँ, शीतल को केवलज्ञान हुआ।
धनपति ने तत्क्षण नभ में अधर ही, समवसरण निर्माण किया।।
उस ज्ञानकल्याणक से पावन, नगरी को नमन हमारा है।
मन में सम्यक्त्व की ज्योति जले, ऐसा अनुरोध हमारा है।।4।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथकेवलज्ञानकल्याणकपवित्रभद्रिका-पुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जहाँ पर शीतल तीर्थंकर के, हुए चार-चार कल्याणक हैं।
भद्रिकापुरी का कण-कण भी, पावन व पूज्य अद्यावधि है।।
चारों कल्याणक से पवित्र, नगरी को नमन हमारा है।
श्रद्धा भक्ति के साथ समर्पित, यह पूर्णार्घ्य हमारा है।।1।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथगर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुःकल्याणकपवित्र-भद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय पूर्णार्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलि।

जाप्य मंत्र-**ॐ ह्रीं भद्रिकापुरीजन्मभूमिपवित्रीकृत-श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमः।**

जयमाला

तर्ज-बाबुल की दुआएं.......

जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।
गुणमाल तीर्थ की सजाते चलो, आतम तीरथ सज जाएगा।।टेक.।।

धरती तो सब हैं एक सदृश, इस मध्यलोक के द्वीपों में।
हैं जीव व पुद्गल सभी जगह, तिर्यंच मनुज के रूपों में।।
प्रभु की गुणगाथा गाते चलो, आतम गुणमय बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।1।।

उनमें ढाई द्वीपों के ही, अन्दर मनुष्य सब रहते हैं।
उससे आगे के किसी द्वीप में, मनुज नहीं जा सकते हैं।।
उनकी महिमा बतलाते चलो, आतम महान बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।2।।

ढाई द्वीपों में प्रथम द्वीप, है जम्बूद्वीप कहा जाता।
उसमें दक्षिण दिश भरतक्षेत्र का, आर्यखंड है सुखदाता।।
उसकी नवगाथा गाते चलो, आतम नव कीरत पाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।3।।

उस आर्यखण्ड में त्रयकालों में, चौबिस तीर्थंकर होते।
उनमें ही वर्तमानकालिक, चौबिस जिन क्षेमंकर होते।।
उन जन्म की गाथा गाते चलो, आतम का बल बढ़ जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।4।।

इन चौबिस जिन की जन्मभूमि, जिनशासन की कीरत मानीं।
इनमें भद्रिकापुरी नगरी, शीतलप्रभु की कीरत मानीं।।
उस तीर्थ को अर्घ्य चढ़ाते चलो, आतम अनर्घ्य पद पाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।5।।

इस जन्मभूमि की पूजन कर, निज जन्म को सार्थक करना है।
इस कर्मभूमि को वंदन कर, निज भव को वंदित करना है।।

अर्चन का भाव बढ़ाते चलो, आतम अर्चित बन जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।6।।

शीतल प्रभु के कल्याण चार, भद्रिकापुरी इतिहास बने।
''चन्दनामती'' यह अर्घ्य थाल, हम सबके लिए वरदान बने।।
पूर्णार्घ्य की माल चढ़ाते चलो, आतम का मल धुल जाएगा।
जयमाल तीर्थ की गाते चलो, आतम तीरथ बन जाएगा।।7।।

दोहा

जन्मभूमि की अर्चना, करे जन्म साकार।
अर्घ्य समर्पण कर लहूँ, आत्म सौख्य भण्डार।।8।।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशीतलनाथजन्मभूमिभद्रिकापुरीतीर्थक्षेत्राय जयमाला महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

गीता छन्द-

जो भव्यप्राणी जिनवरों की, जन्मभूमी को नमें।
तीर्थंकरों की चरणरज से, शीश उन पावन बनें।।
कर पुण्य का अर्जन कभी तो, जन्म ऐसा पाएंगे।
तीर्थंकरों की श्रृंखला में ''चन्दना'' वे आएंगे।।1।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिः।।

भगवान श्री शीतलनाथ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

ॐ जय शीतलस्वामी, प्रभु जय शीतलस्वामी।
घृतदीपक से करूँ आरती, तुम अन्तर्यामी।।ॐ जय.।।

भद्दिलपुर में जन्म लिया प्रभु, दृढ़रथ पितु नामी।।स्वामी.।।
मात सुनन्दा के नन्दा तुम, शिवपथ के स्वामी।।ॐ जय.।।1।।

जन्म समय इन्द्रों ने, उत्सव खूब किया।।स्वामी.।।
मेरू सुदर्शन ऊपर, अभिषव खूब किया।।ॐ जय.।।2।।

पंचकल्याणक अधिपति, होते तीर्थंकर।।स्वामी.।।
तुम दसवें तीर्थंकर, हो प्रभु क्षेमंकर।।ॐ जय.।।3।।

अपने पूजक निन्दक के प्रति, तुम हो वैरागी।।स्वामी.।।
केवल चित्त पवित्र करन निज, तुम पूजें रागी।।ॐ जय.।।4।।

चन्दन मोती माला आदी, शीतल वस्तु कहीं।।स्वामी.।।
चन्द्ररश्मि गंगाजल में भी, शाश्वत शान्ति नहीं।।ॐ जय.।।5।।

पाप प्रणाशक शिव सुखकारक, तेरे वचन प्रभो।।स्वामी.।।
आत्मा को शीतलता शाश्वत, दे तव कथन विभो।।ॐ जय.।।6।।

जिनवर प्रतिमा जिनवर जैसी, हम यह मान रहे।।स्वामी.।।
प्रभो ''चन्दनामति'' तव आरति, भव दुख हानि करे।।ॐ जय.।।7।।

卐

भद्दिलपुर तीर्थ की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–झिलमिल सितारों का ....

शीतलप्रभु जन्मभूमी महान है, नाम भद्रपुरि जग में मान्य है।
आरति मोह तिमिर को हरती, जिनशासन का धाम है।।शीतल.।।टेक.।।

इसी धरा पर शीतल प्रभु जी, मात सुनन्दा से जन्मे।
राजा दृढ़रथ धन्य हुए, इन्द्रादिक उत्सव खूब करें।।
सभी ग्रन्थ करें इसका बखान है, नाम भद्रपुरि जग में मान्य है।
आरती...........।।1।।

ब्याह किया और राज्य किया, फिर दीक्षा ले तप हेतु चले ।
केवलज्ञान हुआ तब समवसरण की रचना अधर बने।।
दिव्यध्वनि से हो जन कल्याण है, नाम भद्रपुरि जग में मान्य है।
आरती...........।।2।।

चार-चार कल्याणक से, पावन नगरी मानी जाती।
इसका वन्दन करने से , आत्मा भी तीरथ बन जाती।।
जिनधर्म की संस्कृति का प्राण है, नाम भद्रपुरि जग में मान्य है।
आरती...........।।3।।

जन्मभूमि की आरति से, अब जीवन सफल बनाना है।
इसका वन्दन करके हमको, वंद्य परम पद पाना है।।
''चंदनामती'' यह तीर्थ महान है, नाम भद्रपुरि जग में मान्य है।
आरती...........।।4।।

卐

भजन

रचयित्री–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज –चलो मिल सब.................

चलो सब मिल यात्रा कर लो, तीर्थयात्रा का फल वर लो।
चौबिस तीर्थंकर की सोलह, जन्मभूमि नम लो।। चलो.।।
ऋषभ अजित अभिनंदन सुमती अरु अनंत जिनवर।
नगरि अयोध्या में जन्मे जो तीरथ है शाश्वत।।
अयोध्या को वंदन कर लो,
ऋषभदेव की जन्मभूमि का रूप नया लख लो।। चलो.।।1।।
श्रावस्ती में संभव कौशाम्बी में पद्मप्रभू।
वाराणसि में श्री सुपार्श्व पारस प्रभु को वंदूँ।।
चन्द्रपुरि तीरथ को नम लो,
जहाँ चन्द्रप्रभु जी जन्मे वह रज सिर पर धर लो।।चलो.।।2।।
पुष्पदन्त काकन्दी शीतल भद्दिलपुर जन्मे।
श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर सिंहपुरी जन्मे।।
तीर्थ चम्पापुर को नम लो,
वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि इसे समझो।।चलो.।।3।।
कम्पिल जी में विमलनाथ, प्रभु धर्म रतनपुरि में।
हस्तिनापुर में शांति कुंथु अर, तीर्थंकर जन्मे।।
चलो मिथिलापुरि को नम लो
मल्लिनाथ नमिनाथ जन्मभूमि वंदन कर लो।। चलो.।।4।।
राजगृही में मुनिसुव्रत नेमी शौरीपुर में।
कुण्डलपुर में चौबिसवें महावीर प्रभू जन्मे।।
तीर्थ से भवसागर तिर लो,
जिनवर जन्मभूमि दर्शन कर जन्म सफल कर लो।। चलो.।।5।।
गणिनी ज्ञानमती जी की, प्रेरणा मिली भक्तों।
सभी जन्मभूमी जिनवर की, जल्दी विकसित हों।।
पुण्य का कोष सभी भर लो,
तीर्थ वंदना से ही "चन्दनामती" सिद्धि वर लो।। चलो.।।6।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–फूलों सा चेहरा तेरा......

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।1।।
तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।2।।
गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
"चंदना" इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग...।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज–मनिहारों का रूप......

शारद माता का रूप दिखाया,
ज्ञान का तूने अलख जगाया।। टेक.।।
दीक्षा लेती न थीं क्वांरी कन्या यहाँ,
बीसवीं सदि में तुमने प्रथम पद लिया।
ज्ञानमति नाम तब तूने पाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।1।।
कोई साहित्य रचना न की साध्वी ने,
सैकड़ों ग्रन्थ अब रच दिए मात ने।
कुन्दकुन्द का पथ दरशाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।2।।
जैन भूगोल रचना नहीं थी कहीं,
मात्र प्राचीन ग्रन्थों में वह थी कही।
जम्बूद्वीप का रूपक दिखाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।3।।
जिनवरों की जनमभूमि विकसित न थीं,
प्रेरणा उनके उद्धार की माँ ने दी।
ऋषभ महावीर नाम गुंजाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।4।।
जैन संस्कृति की तू इक धरोहर है मां,
युग युगों तक जिए तू कहें "चन्दना"।
धरती चाहे सदा तेरी छाया, ज्ञान का तूने अलख जगाया।
।।शारद...।।5।।

मण्डल का नक्शा

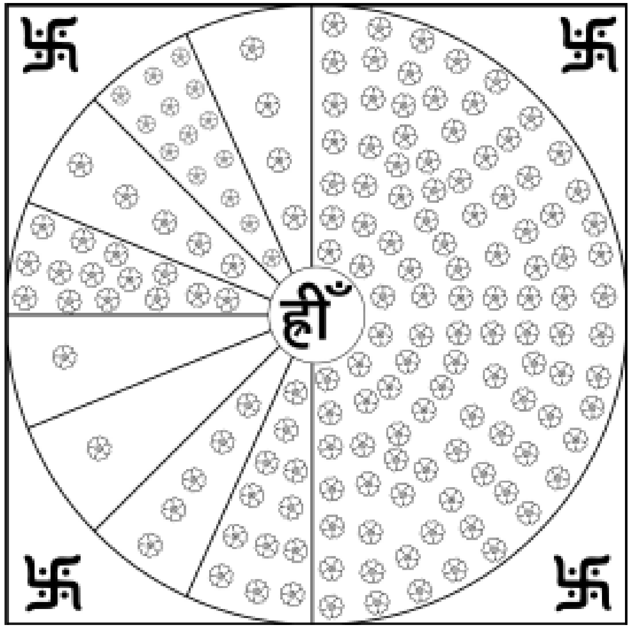

श्री शीतलनाथ दिव्यध्वनि वाणी के 56 अर्घ्य एवं 108 मंत्र के 108 अर्घ्य

प्रथम दल में	12
द्वितीय दल में	5
तृतीय दल में	1
चतुर्थ दल में	1
पंचम दल में	14
षष्ठ दल में	5
सप्तम दल में	14
अष्टम दल में	4
	56 अर्घ्य
नवम दल में	108 अर्घ्य
	कुल - 164 अर्घ्य

पूजा-3, श्री शीतलनाथ दिव्यध्वनि वाणी के-56 अर्घ्य, 108 मंत्र के 108 अर्घ्य, कुल 164 अर्घ्य, पूर्णार्घ्य-3, जयमाला-3